ज्ञान मीमांसा (अनुभववाद) B.A.I (Hons) II Paper

ज्ञान के स्रोत

अनुभववाद ज्ञान मीमांसा का वह सिद्धान्त है, जिसके अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति अनुभव से होती है। इस मत के अनुसार अनुभव ही ज्ञान का एक मात्र साधन माना गया है। अनुभववाद बुद्धिवाद का पूर्ण विरोधी सिद्धान्त है।

अनुभववाद के अनुसार सम्पूर्ण ज्ञान अनुभवजन्य है। ज्ञान अनुभव के द्वारा प्राप्त होता है इसलिए कोई भी ज्ञान जन्मजात नहीं है। इसलिए इन्हें अनुभव सापेक्ष ज्ञान भी कहा जाता है। सभी ज्ञान जीवन काल में ही अर्जित होता है। अनुभव के द्वारा ही मस्तिष्क में विचार भी निर्मित होते हैं। अनुभववादी लॉक ने जन्मजात प्रत्ययों का जोरदार खण्डन किया है। अनुभववाद बुद्धिवाद को निरस्त मानता है। इस सिद्धान्त के अनुसार निर्णयों को समर्थित है। ज्ञान का निर्णायक तत्व प्रत्यक्ष है और प्रत्यक्ष बुद्धि द्वारा उत्पन्न नहीं हो सकते हैं।

अनुभववादी लॉक का कहना है कि जन्म के समय मस्तिष्क में कोई प्रत्यय या ज्ञान नहीं रहता है। जन्म के समय मस्तिष्क कोरा कागज की भाँति रहता है। अनुभव का अर्थ है- मनुष्य की पाँच बाह्य इन्द्रियाँ आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा इसके अतिरिक्त मन को भी कुछ कुछ विचारक आन्तरिक इन्द्रियाँ मानते हैं।

Scanned with CamScanner

इन्हीं इन्द्रियों द्वारा जो मस्तिष्क में ज्ञान अंकित होती है उसे अनुभव कहा जाता है

ज्ञान के आदर्श निरूपण में अनुभववाद बुद्धिवाद से भिन्न है। बुद्धिवाद गणित विज्ञान को अपना आदर्श मानता किन्तु अनुभववाद वस्तुनिष्ठ विज्ञान को आदर्श मानता है अनुभववादी ज्ञान सार्वभौम और अनिवार्य नहीं होता परन्तु इसमें नवीनता का गुण विद्यमान रहता है। अनुभववाद के अनुसार ज्ञान सम्भाव्य होता है, पूर्ण निश्चित नहीं।

पाश्चात्य दार्शनिक जॉन लॉक अनुभववाद के प्रबल समर्थक हैं इनके अनुसार सिर्फ इन्द्रिय संवेदन ही ज्ञान का एक मात्र साधन है। लेकिन अनुभववाद का पूर्ण विकास लॉक, ह्यूम तथा बर्कले के दर्शन में देखने को मिलता है। लॉक के अनुसार इनके प्रत्यक्ष के अलावे किसी भी पदार्थ का ज्ञान नहीं होता है। लॉक का मानना है कि सरल प्रत्यय का ज्ञान हम अनुभव से प्राप्त करते हैं। अनुभव दो प्रकार का होता है (1) संवेदन (2) अन्तः प्रेक्षण। संवेदन इन्द्रियों द्वारा होती है और आन्तरिक निरीक्षण को कहते हैं बर्कले महोदय लॉक के विचारों में संगति लाने का प्रयास किया है। और लॉक की त्रुटियों पर प्रकाश डाला है

ह्यूम बर्कले से भी आगे बढ़कर अनुभववाद में संगति लाना चाहते हैं। इनका कहना है कि जिस प्रकार भौतिक द्रव्यों को अनुभवगम्य होने के कारण वहिष्कृत किया जाता है उसी प्रकार आत्मा और ईश्वर का भी वहिष्कार किया जा सकता है। इस लिए ह्यूम भौतिक द्रव्य, आत्मा और ईश्वर तीनों का खण्डन करते हैं। इनके अनुसार सिर्फ प्रत्यय ही वास्तविक है।

क्रमशः हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वस्तु जगत के विषय में सार्वभौम तथा अनिवार्य ज्ञान सम्भव नहीं है अनुभव ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन है अतः गणित विज्ञान के विषय में संदेहवादी नहीं हैं वे मानते हैं कि गणित विज्ञान में सार्वभौम ज्ञान संभव है।

भारतीय दर्शन में चार्वाक दर्शन अनुभववाद का एक मात्र समर्थक है। चार्वाक के अनुसार प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन है। इनके अनुसार अनुमान, शब्द तथा उपमान प्रमाण ज्ञान दे ही नहीं सकते। चार्वाक सार्वभौम तथा अनिवार्य ज्ञान में विश्वास नहीं रखते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि अनुभववाद ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन नहीं कहा जा सकता है।